हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, Sem II

विषय :— मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा

राष्ट्रानुराग अथवा देश प्रेम सामाजिक प्राणी का एक मूल और सहज प्रवृत्ति है। जिस धरती की गोद में हम पलते हैं, जिस अन्न-जल पान कर हम बढ़ते हैं, जिसकी ज्ञान परम्परा को प्राप्त कर अपना बौद्धिक विकास करते हैं, जिसकी सांस्कृतिक निधि से हमारा मानसिक विकास होता है, उसके प्रति प्रेम और भक्ति के भाव संस्कार बद्ध हो जाना स्वाभाविक है।

राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रीय भावना उदात्त, पवित्र और व्यापक भावना है, जिसके अन्तर्गत स्वदेश-प्रेम, स्वदेश-प्रचार, अतीत चिन्तन, राष्ट्रीय चेतना का संचार, वहाँ निवासियों और मान्य आचारों के प्रति मोह सहानुभूति और एकात्म का अनुभूति करते

APRIL 2016

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MAY 2016

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

तो इस अनुभूति को राष्ट्रीयता कहते हैं।

भारतीय वांग्मय में प्रारम्भ से राष्ट्रीय भाव किसी न किसी रूप में प्रकट हुए हैं। विभिन्न काव्य-भाषा से गुजरती हुई राष्ट्रीय काव्यों में व्यक्त हुई हैं। राष्ट्रीय-भावना पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि जनसाधारण से विराट सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय भावना प्राचीन और मध्यकाल में वैसी कभी नहीं उत्पन्न हुई, जैसी आधुनिक काल में। इस काल के काव्य में हमें विराट राष्ट्रीय भावना के दर्शन होते हैं। देश की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों ने राष्ट्रीय भावों के विकास में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है।

सच तो यह है कि मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीयता के भावों का विकास परिस्थितियों से प्रेरित होकर ही हुआ। अंग्रेजों के राज्य की स्थापना के साथ स्वतंत्रता तथा सामाजिक उत्थान का नवजागरण ही राष्ट्रीय कविता के विकास का मूलाधार है। आरम्भ से ही गुप्त जी में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल थी। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने 1912 ई० में 'भारत-भारती' नामक काव्य की रचना की। द्विवेदीयुग में किसी एक व्यक्ति

APRIL 2016

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MAY 2016

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

को देखना है तो उसे मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में देखा जा सकता है। तत्कालीन जिन धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आन्दोलनों को द्विवेदी जी ने समर्थन दिया, गुप्त जी ने काव्य का सशक्त धरातल प्रदान किया। गुप्त जी ने अपनी काव्य पुस्तक 'भारत-भारती' लिखकर भारतीय जनता के सम्मुख उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य का ऐसा सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया कि आन्दोलन में जान आ गई। अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने अपने उपदेशों और बलिदानों द्वारा जो कार्य नहीं किया, वह कार्य अकेले गुप्त जी की 'भारत-भारती' ने कर दिखाया। इस पुस्तक ने गुप्त जी को राष्ट्रकवि बनाया।

काव्य के क्षेत्रों में राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति अनेक रूपों में हुई है। आधुनिक काव्य में राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत बहुविध भावों की अभिव्यक्ति मुख्यतः निम्न रूपों में हुई है। —

1. भारत-वन्दना
2. अतीत का गौरव-गान
3. सांस्कृतिक नवजागरण

4. साम्प्रदायिकता का विरोध
5. राष्ट्रीय एकता का गायन, आह्वान
6. वर्तमान दुर्दशा के करुण चित्र
7. स्वतंत्रता - संग्राम का वर्णन।

भारत वंदना— आधुनिक काल के प्रारम्भ के साथ ही हिन्दी - काव्य में देश - प्रेम की भावना से ओत - प्रोत अनेक गीतों की रचना हुई है। मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला, पंत, माखनलाल चतुर्वेदी तथा अनेक कवियों ने अत्यन्त श्रद्धा-पूर्वक मातृ-भूमि का यशोवंदन किया है। उन्होंने अनेक सामाजिक विकृतियों को अपने व्यंग्य बाणों का लक्ष्य बनाकर चित्रित किया है। इस प्रकार नया युग-बोध कराकर हमारे कवि ने देश के सांस्कृतिक नवोत्थान में महत्वपूर्ण योग दिया है।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

'हे मातृभूमि! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की'

"अरुण यह मधुमय देश हमारा,
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।"